गुप्तावतार बाबाश्री की कृपा से प्राप्त श्रीविश्वसार-तन्त्र में उद्धृत दुर्लभ
(पूज्य बाबाश्री के अनन्य भक्त स्व० हरकिशन ल० झवेरी द्वारा सङ्कलित)

ऊर्ध्वाम्नायोक्त सिद्ध वीरौघ-गुरु-कवचं

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

ध्यायेच्छिरसि शुक्लाब्जे, द्वि - नेत्रं द्वि - भुजं गुरुम् ।
श्वेताम्बर - परीधानं, श्वेत - माल्यानुलेपनम् ॥१
वराभय - करं शान्तं, करुणा - मय - विग्रहम् ।
वामेनोत्पल - धारिण्या, शक्त्यालिङ्गित - विग्रहम् ॥२
स्मेराननं सु - प्रसन्नं, साधकाभीष्ट - सिद्धिदम् ।

॥ कवच-स्तोत्रम् ॥

पर - नाथादि - नाथश्च, ब्रह्म - रन्ध्रे सहस्रके ।
दिव्य - चक्रे च मे पातु, सर्व - विश्वेश्वरेश्वरः ॥१
श्रीनाथः पातु शिरसि, सिद्धि - दले तु श्रीपतिः ।
वाग् - देवी दुर्ग - नाथश्च, दुर्गा दुर्गति - नाशिनी ॥२
षोडशारे सदा पातु, कण्ठ - देशे स्वरे तथा ।
ईश्वरो भैरवी - नाथो, कालमीशान - भैरवः ॥३
द्वादशारे च मे पातु, वीर - भद्रो कालान्त - कृत् ।
दशारे नाभि - देशे च, रुरु - नाथश्च भैरवः ॥४
परात्पर - गुरुर्देवो, चक्र - नाथो सदाऽवतु ।
षड् - दले काम - नेत्रे च, काम - देवो सदाऽवतु ॥५
मत्स्येन्द्रो मत्स्य - नाथश्च, रक्षतु चाण्ड - कोषके ।
गोरक्षश्च[१] वेद - पद्मे, आधारे पातु मे सदा ॥६
चतुरारे भर्तृहरिः गुरुर्मे सर्व - चक्रके ।
शीर्षादौ गुद - पर्यन्तं, पातु नाथो गुरुश्च मे ॥७
पादादि - शीर्ष - पर्यन्तं, विश्व - नाथो विभुर्गुरुः ।
इष्टो इष्ट - पतिर्नाथो, विश्व-सृक् पातु मे सदा ॥८

१.—गोरक्षनाथः ।

हिन्दी ऊर्ध्वाम्नायोक्त श्रीगुरु--कवच

पहले श्रीगुरुदेव का ध्यान करे। यथा—

अपने शिर के श्वेत कमल (सहस्रार पद्म) में दो हाथ, दो नेत्रवाले, श्वेत वस्त्र पहने, श्वेत ही पुष्प-माला और चन्दन धारण किए श्रीगुरुदेव विराजमान हैं। अपने हाथों से 'वर' और 'अभय' देते हुए वे शान्त स्वरूप हैं, उनके सारे शरीर से दया-भाव प्रकट हो रहा है। उनकी शक्ति (श्रीगुरु-पत्नी) हाथ में कमल - पुष्प लिये उनकी बाईं ओर बैठी हुई उनके शरीर का आलिङ्गन किए हुए हैं। श्री गुरुदेव के मुख पर मुस्कान है, वे अति प्रसन्न हैं और साधकों को वांछित सिद्धि प्रदान करने को उद्यत हैं।

उक्त प्रकार श्री गुरुदेव का ध्यान कर उनका मानसिक पूजन करे। तब श्रीगुरुदेव से सम्बन्धित 'कवच-स्तोत्र' का पाठ करे। यथा—

ब्रह्म-रन्ध्र में स्थित सहस्र-दल-पद्म के दिव्य चक्र में समस्त विश्वों के स्वामी पर-नाथ एवं आदि-नाथ मेरी रक्षा करें ॥१

श्री-नाथ शिर में और श्री-पति सिद्धि-दल में रक्षा करें। वाग्-देवी, दुर्ग-नाथ और दुर्गति-नाशिनी दुर्गा सदा कण्ठ-स्थान के षोडशार-चक्र में और स्वर में तथा ईश्वर, भैरवी-नाथ, नाथ, ईशान भैरव काल की रक्षा करें ॥२-३

द्वादशार-चक्र में कालान्त-कृत वीर-भद्र और नाभि-स्थान में रुरु-नाथ भैरव मेरी रक्षा करें ॥४

चक्र-नाथ परात्पर गुरुदेव सदा रक्षा करें। षड्-दल चक्र में और काम-नेत्रों में सदा काम-देव रक्षा करें ॥५

अण्ड-कोषों में मत्स्य-नाथ मत्स्येन्द्र रक्षा करें। गोरक्षनाथ मूलाधार के चतुर्दल-चक्र में सदा रक्षा करें ॥६

चतुर्दल चक्र में और सिर से लेकर गुदा तक के सभी चक्रों में मेरे गुरुदेव श्री भर्तृ हरिनाथ मेरी रक्षा करें ॥७

पैरों से सिर तक विश्व-नाथ विष्णु, इष्ट-देव, इष्ट-पति, विश्व-सृक्, गुरु-नाथ सदा मेरी रक्षा करें ॥८